११. नौबतखाने में इबादत

कहानी का सारांश

यह पाठ भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के जीवन और उनकी साधना पर आधारित है। इसमें उनके बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक की संगीत-यात्रा, संघर्ष और समर्पण का चित्रण किया गया है।

बिस्मिल्ला खाँ का जन्म डुमराँव (बिहार) में एक संगीतकार परिवार में हुआ। उनका बचपन काशी (वाराणसी) में बीता। उनके मामू अलीबख्श और सादिक हुसैन प्रसिद्ध शहनाई वादक थे। इसी कारण शहनाई का वातावरण उनके जीवन में शुरू से ही रहा। बचपन में वे रसूलनबाई और बतुलनबाई जैसी गायिकाओं के गीत सुनकर संगीत की ओर आकृष्ट हुए।

शहनाई की उत्पत्ति, महत्व और उसकी विशेषताओं का उल्लेख भी इस अध्याय में है। शहनाई को मंगलध्वनि का प्रतीक माना गया है, और दक्षिण भारत के नागस्वरम् की तरह इसे भी शुभ अवसरों पर बजाया जाता है।

बिस्मिल्ला खाँ का पूरा जीवन शहनाई और संगीत के प्रति समर्पित रहा। वे मानते थे कि संगीत एक इबादत है। रोज़ पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़ने के बाद वे अल्लाह से यही दुआ करते कि उन्हें सच्चा सुर मिले, ऐसा सुर जिसमें आँसू बह निकलें। उनका मानना था कि शहनाई का प्रत्येक सुर भगवान और अल्लाह से जुड़ा हुआ है।

मुहर्रम के अवसर पर वे राग नहीं बजाते थे, बल्कि नौहा बजाकर इमाम हुसैन की शहादत को याद करते। दूसरी ओर वे संकटमोचन मंदिर और काशी विश्वनाथ मंदिर से भी गहराई से जुड़े रहे। यह उनकी गंगा-जमुनी तहज़ीब का परिचायक है।

बचपन में उन्हें फिल्में देखने का बड़ा शौक था। उनकी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना थीं और पक्का महाल की कुलसुम की कचौड़ी उन्हें बहुत प्रिय थी। इन छोटी-छोटी बातों से उनका सहज और मानवीय रूप झलकता है।

काशी उनके लिए केवल शहर नहीं बल्कि संगीत और अध्यात्म की पाठशाला थी। वे कहते थे कि "काशी और गंगा मैया छोड़कर कहीं और जाना संभव नहीं।"

उनकी विनम्रता और सरलता का उदाहरण तब दिखता है जब एक शिष्या ने उनकी फटी लुगदी (तहमत) पर टिप्पणी की, तो उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—

"भारत रत्न हमें शहनाई पर मिला है, लुगदी पर नहीं।"

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई का जादूगर माना जाता है। उन्होंने अपनी कला से शहनाई को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। 21 अगस्त 2006 को उनका निधन हुआ, परंतु उनका संगीत आज भी अमर है।

निष्कर्ष: - यह अध्याय हमें बताता है कि उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी पूरी जिंदगी शहनाई और संगीत को समर्पित कर दी। उनका जीवन साधना, सादगी और गंगा-जमुनी संस्कृति का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने शहनाई को मंदिर और मस्जिद दोनों से जोड़कर यह संदेश दिया कि संगीत किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि इंसानियत का है।

शब्दार्थ

- **अज़ादारी** - दुःख मनाना
- **ड्योढ़ी** - दहलीज
- **सजदा** - माथा टेकना
- **नौबतखाना** - प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान
- **रियाज़**- अभ्यास
- **मार्फ़त** - द्वारा
- **श्रृंगी** - सींग का बना वाद्ययंत्र
- **मुरछंग** - एक प्रकार का लोक वाद्ययंत्र
- **नेमत** - ईश्वर की देन, सुख, धन, दौलत
- **इबादत** - उपासना
- **उहापोह** - उलझन
- **तिलिस्म** - जादू
- **बदस्तूर** - तरीके से
- **गमक** - महक
- **दाद** - शाबाशी
- **अदब** - कायदा
- **अलहमदुलिल्लाह** - तमाम तारीफ़ ईश्वर के लिए
- **जिजीविषा** - जीने की इच्छा
- **शिरकत** - शामिल
- **रोजनामचा** - दिनचर्या
- **पोली** - खाली
- **बंदिश** - धुन
- **परिवेश** - माहौल
- **साहबज़ादे** - बेटे, पुत्र
- **मुराद** - इच्छा
- **निषेध** - मनाही
- **ग़मज़दा** - दुःख से पूर्ण
- **माहौल** - वातावरण
- **बालसुलभ** - बच्चों जैसी
- **पुश्तों** - पीढ़ियों
- **कलाधर** - कला को धारण करने वाला
- **विशालाक्षी** - बड़ी आँखों वाली
- **बेताले** - बिना ताल के
- **तहमद** - लुंगी
- **परवरदिगार** - ईश्वर
- **दादरा** - एक प्रकार का चलता गाना।

मुहावरे

- **फटा सुर न बख्शना –** किसी भी गलती या कमी को नज़रअंदाज़ न करना।
- **मोती बरसना / आँखों से मोती झरना –** आँसुओं का बहना।
- **मेहरबान होना –** कृपा करना, दया करना।

www.onepointlearning.com

प्रश्न - अभ्यास

1. **शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?**

   उत्तर: शहनाई बजाने के लिए रीड (नरकट की नली) की आवश्यकता होती है। यह नरकट मुख्यतः बिहार के डुमराँव क्षेत्र में सोन नदी के किनारे पाया जाता है। इसी कारण डुमराँव शहनाई की दुनिया में विशेष स्थान रखता है। यही बिस्मिल्ला खाँ का जन्मस्थान भी है।

2. **बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?**

   उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ ने शहनाई को केवल मांगलिक अवसरों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शास्त्रीय संगीत का महत्वपूर्ण वाद्य बना दिया। उन्होंने अपनी साधना से शहनाई की ध्वनि में ऐसी पवित्रता और प्रभाव भर दिया कि यह मांगलिक अवसरों की मंगलध्वनि बन गई। इसलिए उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

3. **सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?**

   उत्तर: जिन वाद्ययंत्रों में फूँककर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उन्हें सुषिर-वाद्य कहा जाता है। शहनाई की गूँज, मधुरता और प्रभावशाली ध्वनि ने इसे सभी सुषिर वाद्यों में श्रेष्ठ बना दिया, इसलिए इसे "सुषिर वाद्यों में शाह" की उपाधि दी गई।

4. **आशय स्पष्ट कीजिए—**

   (क) 'फटा सुर न बख्शें। लुगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'

   उत्तर: खाँ साहब ने अपने शिष्या को समझाया कि असली महत्व कपड़ों का नहीं, बल्कि सुर का है। यदि सुर बिगड़ जाए तो संगीत की आत्मा ही नष्ट हो जाएगी, जबकि कपड़े तो साधारण वस्त्र हैं, जिन्हें आसानी से सुधारा जा सकता है।

   (ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

   उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ संगीत को ईश्वर की भक्ति मानते थे। वे अल्लाह से प्रार्थना करते थे कि उनके सुर में ऐसी शक्ति हो कि श्रोताओं का हृदय पिघल जाए और उनकी आँखों से सच्चे भावों के आँसू बह निकलें।

5. **काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?**

   उत्तर:

   - संगीत और साहित्य की पुरानी परंपराओं का लुप्त होना
   - लोगों का रियाज़ और साधना के प्रति उदासीन होना
   - अदब और तहज़ीब का ह्रास
   - पक्का महाल की मिठाइयों और परंपरागत मेलजोल का खो जाना

   इन सब बातों ने उन्हें बहुत व्यथित किया।

www.onepointlearning.com

6. **पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि—**

(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

उत्तर: वे मुस्लिम होकर भी काशी विश्वनाथ मंदिर और बालाजी मंदिर में शहनाई बजाते थे। साथ ही मुहर्रम में नौहा भी बजाते थे। इस प्रकार वे हिंदू-मुस्लिम गंगा-जमुनी तहज़ीब के प्रतीक बने।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर: वे सरल, विनम्र और सादगीप्रिय थे। फटी लुगदी पहनने पर भी उन्हें गर्व था। वे शोहरत और सम्मान के पीछे नहीं भागे। उनका जीवन संगीत और इंसानियत के प्रति समर्पित था।

7. **बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।**

उत्तर:

- बचपन में रसूलनबाई और बतुलनबाई का गायन सुनना
- नाना और मामू अलीबख्श खाँ से शहनाई की तालीम लेना
- बालाजी मंदिर और काशी विश्वनाथ मंदिर में नियमित रियाज़ करना
- संकटमोचन मंदिर के संगीत समारोह में भाग लेना

इन सबने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।

रचना और अभिव्यक्ति

8. **बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?**

उत्तर: उनकी सादगी, संगीत के प्रति अपार समर्पण, ईश्वर पर अटूट विश्वास, गंगा-जमुनी संस्कृति के प्रति निष्ठा और विनम्रता मुझे अत्यधिक प्रभावित करती हैं।

9. **मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर: मुहर्रम के दिनों में बिस्मिल्ला खाँ और उनका परिवार शहनाई नहीं बजाते थे। आठवीं तारीख को वे शहनाई लेकर दालमंडी से फातमान तक नौहा बजाते हुए पैदल चलते थे। इस दिन वे राग नहीं बजाते थे, बल्कि इमाम हुसैन की शहादत को याद कर अज़ादारी में शामिल होते थे।

10. **बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी पूरी जिंदगी शहनाई और संगीत को समर्पित कर दी। उन्होंने शोहरत, पैसा और आराम की जगह केवल संगीत साधना को महत्व दिया। वे रोज़ अल्लाह से अच्छे सुर की दुआ माँगते और कहते कि शहनाई उनकी इबादत है। इसलिए उन्हें कला का अनन्य उपासक कहा जा सकता है।

www.onepointlearning.com

भाषा- अध्ययन

11. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए-

(क) यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।

- **उपवाक्य:** कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।
- **भेद:** संज्ञा उपवाक्य (कर्तृ के रूप में)।

(ख) रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।

- **उपवाक्य:** जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।
- **भेद:** विशेषण उपवाक्य।

(ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

- **उपवाक्य:** जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।
- **भेद:** विशेषण उपवाक्य।

(घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।

- **उपवाक्य:** कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।
- **भेद:** संज्ञा उपवाक्य (कर्म के रूप में)।

(ड़) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।

- **उपवाक्य:** जिसकी गमक उसी में समाई है
- **भेद:** यह विशेषण उपवाक्य है क्योंकि "वरदान" संज्ञा की विशेषता बता रहा है।

(च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

- **उपवाक्य:** कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा
- **भेद:** यह विधेय उपवाक्य है क्योंकि यह "देन्" का विस्तार करता है।

12. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्यों में बदलिए:

(क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।

- **मिश्रित वाक्य**: यह ऐसी बालसुलभ हँसी है, जिसमें कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है।

- **मिश्रित वाक्य**: काशी में संगीत आयोजन की एक ऐसी परंपरा है, जो प्राचीन एवं अद्भुत है।

(ग) धत्! पगली! ई भारत रत्न हमको शहनाइयाँ पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।

- **मिश्रित वाक्य**: धत्! पगली! ई भारत रत्न जो हमको मिला है, वह शहनाइयाँ पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।

(घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

- **मिश्रित वाक्य**: काशी का नायाब हीरा वह है, जो हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

www.onepointlearning.com